870/860

दैनिक जागरण
जागरण सिटी
पृष्ठ संख्या :- IV
दिनांक :- 15-04-2014

किसान घर बैठे कर सकेंगे मिट्टी की जांच

गौतम कुमार मिश्रा, पश्चिमी दिल्ली

किसानों को अब खेत की मिट्टी की जांच के लिए प्रयोगशाला जाने की जरूरत नहीं होगी। पूसा स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की ओर से मिट्टी की जांच के लिए एक यंत्र का विकास किया गया है। रक्त व मूत्र जांच की तरह ही मिट्टी की जांच महज एक स्ट्रिप की सहायता से की जा सकेगी। जांच के नतीजों के लिए लंबा इंतजार करने की जरूरत नहीं है। मात्र 20 मिनट में ही नतीजे आपको मिल जाएंगे। मिट्टी की जांच के साथ यह यंत्र नतीजों के आधार पर उर्वरकों के उपयोग के बारे में सलाह भी देगा। इस सलाह पर किसान फसलों की सेहत में सुधार सकेंगे। इस यंत्र को पूसा ने मिट्टी जांच व उर्वरक सलाह मीटर (सॉयल टेस्ट एंड फर्टिलाइजर रेकमेंडेशन मीटर) का नाम दिया है। पूसा संस्थान ने इसके व्यावसायिक उत्पादन के लिए एक निजी कंपनी से करार किया है। इस यंत्र की कीमत करीब 30 हजार है। यह यंत्र एक स्ट्रिप की सहायता से मिट्टी की रिपोर्ट देगा। एक स्ट्रिप से करीब 50 नमूनों की जांच हो सकेगी। इस स्ट्रिप की कीमत करीब दो हजार रुपये है। इस यंत्र को कोई भी किसान पूसा स्थित संस्थान से खरीद सकता है। खरीदने वाले व्यक्ति को संस्थान की तरफ से दो महीने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस यंत्र का किसान व्यावसायिक इस्तेमाल भी कर सकेंगे। इससे उन्हें अच्छी खासी आय हो सकेगी।

> इस यंत्र के संचालन का तरीका बेहद साधारण है। इससे खेत की मिट्टी में पोषक तत्वों की मात्रा का पता चलेगा तथा किस फसल के लिए कितनी मात्रा में उर्वरकों का इस्तेमाल हो, इसकी भी सलाह मिलेगी। यंत्र का किसान व्यावसायिक उपयोग भी कर सकते हैं। –डॉ. जेपीएस डबास, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

मिट्टी की जांच क्यों जरूरी

वैज्ञानिकों की मानें तो उर्वरकों के बिना सोचे-समझे इस्तेमाल के कारण मिट्टी की सेहत काफी बिगड़ चुकी है। इस बिगड़ी सेहत के कारण ही जमीन की उत्पादकता लंबे समय से स्थिर बनी हुई है। वैज्ञानिकों का कहना है कि जमीन की सेहत भी हम इंसानों की सेहत जैसी होती है, लेकिन इंसान बीमार होने पर चिकित्सीय सलाह के बाद ही दवा का इस्तेमाल करता है।

प्रयोगशाला में ही होती थीं मिट्टी की जांच

इससे पहले प्रयोगशाला में ही मिट्टी की जांच हो सकती थी। किसान खेत की मिट्टी लेकर प्रयोगशाला आते थे। बाद में कृषि वैज्ञानिक लंबी प्रक्रिया के बाद मिट्टी की जांच करते थे।

विकसित किस्मों पर चर्चा कर लेंगे फैसला : डॉ. अंबरीश

जागरण संवाददाता, पश्चिमी दिल्ली : कृषि क्षेत्र से जुड़ी उपलब्धियों व नई तकनीकों पर चर्चा के लिए पूसा स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में 16 अप्रैल से दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

डॉ. अंबरीश शर्मा

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के कृषि प्रौद्योगिकी आकलन एवं स्थानांतरण केंद्र के विभागाध्यक्ष डॉ. अंबरीश कुमार शर्मा ने बताया कि कार्यशाला में देश के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि के विकास से जुड़े 30 गैर सरकारी संगठन व 16 कृषि विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। इसमें कृषि क्षेत्र में प्राप्त आंकड़ों एवं संस्थान की ओर से विकसित की गई प्रजातियों के बारे में चर्चा होगी। इस दौरान इस बात का भी फैसला किया जाएगा कि कौन सी किस्में किस क्षेत्र के लिए उपयुक्त हैं और कहां के लिए नहीं। यदि कोई ऐसी किस्म है जिसे खास क्षेत्र के लिए जारी किया गया है लेकिन उसकी उपयोगिता पूरे देश में है तो उसका भी फैसला किया जाएगा। डॉ शर्मा ने बताया कि इस कार्यशाला के लिए जो आंकड़े उपलब्ध हैं उन्हें देश के विभिन्न हिस्सों में कार्यरत कृषि संगठन, किसानों व वैज्ञानिकों से चर्चा कर प्राप्त किया गया है। इस दौरान जिन किस्मों के बारे विशेष चर्चा किए जाने की संभावना है उसमें गेहूं की एचडी 2733, एचडी 2932, एचडी 2967 व धान की बासमती किस्में शामिल हैं।

Sunita Gupta 15/4/14

15/4/2014